Course- B.A. III

Subject- Ancient History

Paper- I (Element of Numismatics and Paleography)

Unit I- Origin and Antiquity of Coinage in ancient India: Nishka, Sataman, Karsapana

शीर्षक– मुद्रा की उत्पत्ति एवं विकास

Prepared by

Dr. Manindra Yadav

मुद्रा की उत्पत्ति एवं विकास

प्राचीन भारत में मुद्रा प्रणाली की उत्पत्ति एवं विकास– मुद्रा का इतिहास बदले में पाने की इच्छा से दी गयी वस्तुओं से प्रारम्भ होता है, जिसे हम **वस्तु–विनिमय प्रणाली (Barter System)** के नाम से जानते हैं। यह वस्तु–विनिमय प्रणाली आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में यदा–कदा देखने को मिलती है। मुद्रा प्रणाली के विकास को हम निम्नलिखित चार चरणों के माध्यम से समझ सकते हैं।

प्रथम चरण– प्रारम्भिक भारतीय अर्थव्यवस्था जीवन–निर्वाह अर्थव्यवस्था थी। पूर्व एवं मध्य पाषाण–काल तक मानव जीविका आखेट और अन्न संग्रह पर निर्भर थी। इसलिए उनकी आवश्यकताएं भी सीमित थीं। आखेटक मानव मांश व खाल के बदले अनाज, कन्दमूल, फल इत्यादि प्राप्त करता था। अतः **सर्वप्रथम विनिमय का माध्यम खाद्य सामग्रियां बनी**।

द्वितीय चरण– वस्तु विनिमय प्रणाली में किसी वस्तु के बदले में वस्तु की कितनी मात्रा दी जाय तथा अदला–बदली का आधार क्या हो इत्यादि अनेक कारणों से अदला–बदली की प्रक्रिया में समस्यायें उत्पन्न होने लगीं। इन समस्याओं के निराकरण के लिए मनुष्य का ध्यान सर्वप्रथम पाषण के औजारों पर गया। पाषाण के उपकरण संचय और सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त थे क्योंकि इनके खराब होन का भय कम था तथा ये लम्बे समय तक रखे जा सकते थे। इस प्रकार **पशु–पक्षी,**

भेड़–बकरियों के साथ–साथ पाषण के उपकरण भी विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार किए जाने लगे।

तृतीय चरण– मानव समुदाय के विकास के साथ–साथ कालान्तर में स्वर्ण, रजत एवं ताम्र के ज्ञान के साथ ताम्राश्मयुगीन सभ्यता का सूत्र–पात हुआ। **इस चरण में व्यापार का माध्यम शंख, प्रस्तर एवं धातु निर्मित मनके बने**। सिन्धु सभ्यता की समकालीन मेसोपोटामिया की सभ्यता में व्यापार–विनिमय के निमित्त चाँदी के धातुखण्ड का प्रयोग होता था जिसे शेकेल कहते थे। मोहनजोदड़ो से भी चाँदी के चौकोर धातुखण्ड मिले हैं। सम्भवतः इनका प्रयोग भी विनिमय के माध्यम के रूप में होता रहा होगा।

चतुर्थ चरण– व्यापार विनिमय में धातु के प्रयोग में उसकी शुद्धता की जाँच आवश्यक थी। चूँकि परिक्षण और तौल में अधिक समय लगता था, इसलिए विनिमय के लिए एक नया माध्यम ढूँढ निकाला गया, धातु के इस नये माध्यम को हम **सिक्का (Coins)/मुद्रा** के नाम से जानते हैं।

सिक्का (Coins)– भारतीय साहित्यिक विवरणों में इन धातुखण्डों को 'आहत' नाम दिया गया है। आहत सिक्कों को पंचमार्क सिक्के भी कहा जाता है क्योंकि इसमें पांच प्रकार के चिन्ह पाये जाते हैं। ये सिक्के रजत एवं ताम्र निर्मित होते थे।

- ❖ स्वर्ण निर्मित धातुखण्ड (आहत मुद्रा) अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है। स्वर्ण निर्मित धातुखण्डों का उल्लेख केवल साहित्यिक विवरणों (ऋग्वेद) में प्राप्त होता है। ऋग्वेद में इन धातुखण्डों को **निष्क और सुवर्ण** कहते थे।

इन स्वर्ण, रजत एवं ताम्र निर्मित निश्चित भार के धातुखण्डो को निम्नलिखित नामों से जाना जाता है–

धातु		नाम
स्वर्ण	–	निष्क, सुवर्ण
रजत	–	कार्षापण, शतमान, शाण (शतमान का 1/8)

ताम्र — माष, काकणी, विंशतिक

- ❖ मनुस्मृति में इन सिक्कों को धरण (निश्चित वजन धारण करते थे) एवं पुराण (पुराना) कहा गया है।

निष्क–निष्क का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद में चार स्थानों पर इसका उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में निष्क का उल्लेख स्वर्ण के आभूषण के रूप में मिलता है जो गले में धारण किया जाता था। इसे निष्कग्रीव कहते थे। पंचविष ब्राह्मण ग्रन्थ में प्रथम बार रजत निष्क का उल्लेख मिलता है। उत्तर वैदिक साहित्य में भी निष्क का प्रयोग दान एवं आभूषण के सन्दर्भ में ही प्राप्त होता है। कहीं भी इसका उपयोग विनिमय के माध्यम के रूप में नहीं मिलता है।

किन्तु आगे चलकर पाणिनि के अष्टाध्यायी में तीन सूत्रों में निष्क का उल्लेख हुआ है। जिसमें से दो सूत्रों में निष्क का प्रयोग वस्तुओं को क्रय करने के सन्दर्भ में हुआ है। पाणिनि के काल तक आते–आते निष्क मुद्र का सूचक बन गया। जातक कथाओं में भी निष्क का उल्लेख मुद्रा के रूप में हुआ है।

शतमान– वैदिक काल में शतमान रजत एवं स्वर्ण दोनों ही धातुओं के बने होने का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में राजसूय यज्ञ के अवसर पर शतमान को दान दिए जाने का उल्लेख मिलता है। शतमान 100 के मान का धातु पिण्ड था।

रजत शतमान का प्राचीनतम उल्लेख मैत्रायणी संहिता में प्राप्त होता है। पाणिनि के अष्टाध्यायी में शतमान का उल्लेख रजत मुद्रा के रूप में हुआ है जिसक वनज लगभग 100 रत्ती (1.75) ग्रेन के बराबर है।

शाण– पाणिनि के काल में शाण नामक सिक्के का भी प्रचलन था। यह रजत से निर्मित था। यह शतमान का 1/8 होता था।

कार्षापण– कार्षापण का सर्वप्रथम उल्लेख सामविधान ब्राह्मण में हुआ है। कार्षापण स्वर्ण, रजत एवं ताम्र तीनों ही धातुओं के बने होते थे। कार्षापण दो शब्दों से मिलकर बना है– कर्ष + पण ।

जहां कर्ष एक प्रकार का बीज तथा पण एक धातु पिण्ड है। कर्ष के बीज के आधार पर धातुपिण्ड का भार–मान निर्धारित होने के कारण इसको कार्षापण नाम दिया गया मनुस्मृति में इन सिक्कों को धरण और पुराण नाम से सम्बोधित किया गया है।

शलाका मुद्रा (Bent Bar)– शलाका मुद्रायें गांधार क्षेत्र से प्राप्त हुई हैं जिनकी संख्या 33 है। शलाका मुद्राओं की तौल लगभग शतमान के बराबर होती थी। इनको प्यालीनुमा मुद्रायें भी कहते हैं।

शलाका मुद्रा

प्राचीन भारतीय मुद्रा की उत्पत्ति सम्बन्धी विभिन्न मत– प्राचीन भारतीय मुद्राशास्त्र के जनक जेम्स प्रिंसेप हैं। मुद्रा के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (Numismatics)** कहा जाता है। मुद्रा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक मत दिए गए हैं जो निम्न हैं–

यूनानी उत्पत्ति का मत– इस मत के प्रवर्तक **जेम्स प्रिंसेप** हैं। उनके अनुसार भारत में मुद्राओं का प्रचलन, बाख्त्री–यवन शासकों की मुद्राओं **(द्राख्म)** के अनुकरण पर आरम्भ हुआ। इसी प्रकार का विचार **विल्सन** महोदय का भी है। इन विद्वानों के इस मत का आधार बाख्त्री–यवन एवं औदुम्बर मुद्र में समानता है। किन्तु औदुम्बर मुद्राओं के बहुत पहले ही भारत में आहत मुद्राओं का प्रचलन हो गया था। सिकन्दर के आक्रमण के बहुत पहले ही (लगभग दो शताब्दी पूर्व) भारत में मुद्रा का प्रचलन था। इस बात का प्रमाण तक्षशिला से प्राप्त दो मुद्रा निधियां हैं। जिसके साथ डायोडोटस और सिकन्दर की मुद्रा भी प्राप्त हुई है। दोनों मुद्राओं के तुलनात्मक अध्ययन् से पता चलता है भारतीय मुद्राओं की अपेक्षा यूनानियों की मुद्रायें नयी हैं। अतः यह मत स्वीकार्य नहीं है।

पारसिक उत्पत्ति का मत– इस मत के प्रवर्तक **जे0 ऐ0 डिकार्डिमेन्चेज** थे। ये भारतीय आहत मुद्रा की उत्पत्ति हखामनी मुद्राओं से मानते हैं। उनका कहना है कि हखामनी शासकों ने अपनी मुद्रा **सिग्लोई (Sigloi)** के साथ–साथ उसका भारतीय प्रकार, आहत मुद्राओं के रूप में प्रचलित किया। उनका यह तर्क स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि सिग्लोई मुद्रा टेलेन्ट के तौर पर निर्मित है जिनका वजन 86 ग्रेन है जबकि आहत मुद्राओं का मानक वजन 56 ग्रेन था।

बेबीलोन उत्पत्ति का मत– इस मत का प्रतिपादन **केनेडी** महोदय द्वारा किया गया। उनके अनुसार छठी शताब्दी ई0पू0 में पश्चिम एशिया के साथ व्यापार प्रारम्भ करने के बाद भारतवासियों ने बेबिलोन की मुद्रा का अनुकरण करते हुए आहत मुद्राओं का प्रचलन किया थ। बेबिलोनिया की **शेकेल** तथा भारतीय आहत मुद्रा में आकार, बनावट, बनाने की विधि आदि में काफी समानता है। किन्तु दोनों मुद्राओं में समानता के साथ–साथ कुछ अन्तर भी है। दोनों ही मुद्राओं की तौल, चिन्ह आदि में विभिन्नता है। आहत मुद्राओं की तौल 56 ग्रेन तथा शेकेल की तौल 132 ग्रेन है। आहत मुद्रायें भारत के मध्यवर्ती भागों में प्रचलित थीं इस क्षेत्र का बेबिलोन से कोई सम्बन्ध नहीं था और न ही भारत में शेकेल की प्राप्ति हुई है। अतः इस मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

भारतीय उत्पत्ति का मत– इस मत के समर्थक **ई0जे0 रैप्सन, कनिंघम, डी0आर0 भण्डारकर, एस0के0 चक्रवर्ती, ए0एस0 अल्टेकर** आदि इतिहासकार भारतीय आहत मुद्रा की स्वदेशी उत्पत्ति में विश्वास करते हैं। वैदिक साहित्य में प्राप्त कुछ मुद्रावाची शब्दों के आधार पर थामस तथा भण्डारकर जैसे विद्वान भारत में मुद्रा का प्रारम्भ वैदिक काल से मानते हैं। वैदिक साहित्य में अनेक स्थानों पर निश्चित तौल के धातुखण्डों का उल्लेख मिलता है। किन्तु ऐसे निश्चित तौल के धातुखण्डों को, जिन पर किसी निश्चित प्राधिकारी अथवा संस्था द्वारा निर्धारित चिन्ह अंकित न किए गये हों उन्हें धन तो कहा जा सकता है किन्तु मुद्रा नहीं।

वैदिक साहित्य में उल्लेखित 'हिरण्य' ऐसा ही मूल्यवान धातुखण्ड था। ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है कि एक ऋषि ने दिवोदास को दस अश्व, दस कोश, दस बहुमूल्य वस्त्र और दस हिरण्यपिण्ड प्रदान किए थे। सामान्यतः हिरण्य से तात्पर्य स्वर्ण से माना जाता है किन्तु संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में हरित हिरण्य (स्वर्ण) के साथ ही रजत हिरण्य (चाँदी) एवं हिरण्यबिन्दु (मोती) का उल्लेख मिलता है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में धन के निश्चित परिमाण को हिरण्य कहा गया है। अतः इस बात की प्रबल सम्भावना है कि हिरण्य शब्द का प्रयोग वैदिक काल में धनसूचक मूल्यवान धातुखण्डों के लिए किया जाता था। जिसमें स्वर्ण एवं रजत दोनों ही धातु सम्मिलित थी। ऋग्वेद में एक स्थान पर धन के रूप में गाय एवं अश्व के साथ चन्द्रवत (रजत) का उल्लेख मिलता है। एक अन्य श्लोक में भारद्वाज

धन के रूप में चन्द्र की बृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। रजत का चांदी नामकरण सम्भवतः चन्द्रमा के समान धवल दिखाई देने के कारण ही पड़ा होगा।

पुरातात्त्विक साक्ष्य इस बात की पुष्टि करते हैं भारत के साथ–साथ विश्व के अनेक देशों में मुद्रा के प्रचलन के पूर्व निश्चित तौल के धातुखण्ड विनिमय के माध्यम के रूप प्रयोग किए जाते थे। ईरान, ईराक, सीरिया, मिस्त्र इत्यादि देशों से ऐसी निधियां प्राप्त हुई हैं। भारत में ऐसी निधियां आन्ध्र प्रदेश के सिंगावरम्, उत्तर प्रदेश में बिजनौर जिले के शामियांवाला नामक स्थान से तथा मध्य प्रदेश में बालाघाट इत्यादि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। बालाघाट के गुंगेरिया से प्राप्त ताम्रायुध निधियों के साथ रजत–पत्र से बनी गोल एवं **गोमुण्ड** आकार के कुछ रजत उपकरण प्राप्त हुए हैं। चूँकि गाय वैदिक काल में विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार की जाती थी अतः उसके प्रतीक के रूप में मुण्ड के आकार के रजत के धातु–पत्र भी स्वीकार किए जाते रहे होंगे। इस प्रकार निश्चित तौल के धातुखण्डों का विनिमय के माध्यम के रूप में प्रचलन लगभग 1,000 ई0पू0 तक सम्पूर्ण विश्व में दिखायी देता है। अतः भारतीय मुद्रा की उत्पत्ति के सन्दर्भ में किसी भी अन्य मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

(1) गुप्त, परमेश्वरीलाल– भारत के पूर्वकालिक सिक्के।

(2) राव राजवन्त एवं राव प्रदीप कुमार– प्राचीन भारतीय मुद्रायें

(3) Allen, John- Catalogue of Coins in the British Museum (Ancient India)

(4) Chakravarti, S.K. - A Study of Ancient Indian Numismatics

(5) Brown, C.J. – The Coins of India